International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 229-236

मारवाड़ की प्राचीनतम बावड़ी : मण्डोर बावड़ी

डॉ. प्रतिभा सांखला*

सार

सम्पूर्ण मारवाड़ में जल की अत्यन्त कमी रही है। क्योंकि मारवाड़ में वर्षा का औसत बहुत ही कम रहता है। इसलिए मारवाड़ में बूंद–बूंद जल एकत्रित करने की परम्परा के तहत ही यहाँ अनेक परम्परागत कुँए, बावड़ियाँ तालाबों का निर्माण करवाया गया। मण्डोर बावड़ी मण्डोर रेलवे स्टेशन के सामने बनी हुई प्राचीन बावड़ी है। यह बावड़ी पहाड़ काट कर बनाई गई है। यह एक मीठे पानी की बावड़ी है इसलिए इसे सुमनोहरा बावड़ी भी कहा जाता है। इसमें एक शिलालेख भी लिखा मिला है जिसकी लिपि कुटिल है। पर यह बावड़ी अब उचित रख रखाव के कारण उपेक्षित सी है।

शब्दकोश: *मारवाड़, जल, जलाशय, बावड़ी, रेलवे स्टेशन, मण्डोर।*

प्रस्तावना

मारवाड़ में पानी की समस्या सदैव रही है। पानी की दुर्लभता के कारण ही इस प्रदेश को मरू प्रदेश या सूखा प्रदेश कहा गया है। कम वर्षा के कारण इस प्रदेश के भूमिगत जल के प्रति "सस्ता खून व महंगा पानी" की लोकोक्ति प्रचलित है।[1] जल के महत्व को स्वीकार कर हमारे पूर्वजों ने इसके संग्रह एवं उपयोग के कई उपाय किये। कुँए बावड़ियां, तालाब खुदवाने झालरे टांके आदि बनवाने जैसे जनकल्याणकारी कार्य किये। फिर इनमें संग्रहित पानी की सुचिता की रक्षा के लिए भी कई तरह के उपाय, नियम, परम्परायें बनाई, जिन्हें हम आज परम्परात जलस्त्रोत कहते है।[2] प्राचीन काल में पीने के पानी की समस्या कुंओं, बावड़ियों व तालाबों से हल होती थी। मारवाड़ में पानी की समस्या सदैव रही है। अतः जलाशयों का बड़ा महत्त्व रहा है, जोधपुर नगर के विभिन्न भागों में कई बावड़ियाँ है।[3]

वर्तमान जोधपुर नगर से कुछ ही किलोमीटर दूर उत्तर में मण्डोवर नामक स्थान है, जो अब जोधपुर नगर–निगम की सीमा है। यह स्थान बहुत प्राचीन पुरातात्विक अवशेषों से पूर्ण है। इसके सम्बन्ध में कई पौराणिक कथाएँ और आख्यान प्रचलित है। अपनी कीर्ति के लिए एक पुरातन स्थान को जोधपुर का मुकुट कहे तो सर्वथा उचित है।[4] जोधपुर शहर के उत्तर में 6 मील पर मारवाड़ की पुरानी राजधानी मंडोवर है। प्राचीन काल में मांडव्य ऋषि इस पहाड़ पर तपस्या करते थे। जिससे इसका नाम मांडव्यपुर पड़ा और कालान्तर में इसी का अपभ्रंश मंडोवर प्रसिद्ध हुआ।[5] मण्डोर प्राचीन काल में एक विस्तृत नगर तथा मारवाड़ की राजधानी के नाम

---

* सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

से विख्यात था। मण्डोर का इतिहास चौथी शताब्दी से मिलना प्रारम्भ होता है।[6] वि.सं. 1515 (ई. सन् 1458) में मंडोर के किले में राव जोधाजी का शास्त्रानुसार राज्याभिषेक किया गया।[7] मारवाड़ की राजधानी पहले मंडोर थी। जब राव जोधा ने जोधपुर के किले की नींव डाली और शहर बसाना आरम्भ किया तब से जोधपुर नगर इस राज्य की राजधानी बना, जिससे मारवाड़ को अब जोधपुर राज्य भी कहते हैं।[8] राव जौधे सं. 1512 रा वैसाख वद 11 चीत्तौड़ रा किवाड़ बालिया मेवाड़ लूटी अर पाछा सोझत आय मंडोवर आयौ अर संवत् 1515 जोधपुर बसाय गढ़ करायौ।।1।।

संवत् 515 जेठ सुद।। चिड़ियां टूंक भाखर रै ऊपर गढ़ री नींम दिराई अर सहर जोधपुर बसायौ[9]

जोधपुर शहर में उत्तर में पाँच मील पर मारवाड़ की पुरानी राजधानी मंडोवर (मंडोर) है। जोधपुर रेलवे की जो शाखा राई का बाग पैलेस और महामंदिर स्टेशन होकर फलोदी गई है।[10] मंडोर स्टेशन के समीप प्रतिहार कालीन एक प्राचीन बावड़ी है।[11] वर्तमान में यह बावड़ी मण्डोर रेलवे स्टेशन के ठीक सामने पहाड़ी शिलाओं को काटकर बनाई हुई है।[12] पहाड़ी के नीचे चट्टान काटकर एक बावड़ी (बापी) बनाई गई है। इस बावड़ी का आकार अंग्रेजी के श्स्श अक्षर जैसा है।[13] इसमें लगे एक शिलालेख से इसके निर्माण काल के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बावड़ी में दक्षिण दिशा में बनी सीढ़ियों से की ओर आने वाली दीवार पर कुटिल लिपि में अंकित शिलालेख है।[14] बावड़ी के अन्दर पानी से तीन–चार फुट की ऊँचाई पर उत्तर की ओर दीवार पर 9 पंक्तियों का कुटिल लिपि में एक लेख उत्कीण है। जो राजस्थान के धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालता है।[15] यह शिलालेख कहता है कि आयु और धन तो संसार में सारहीन है, चिरस्थायी वस्तु तो यश है। इसी यश अभिलाषा से इस बावड़ी का निर्माण करवाया गया है। वि.सं. 742 (ई. 683) में निर्मित यह वापिका निर्माण कला पर यह बावड़ी महत्वपूर्ण जानकारी देती है।[16]

मण्डोर गार्डन से थोड़ी दूर स्थित मंडोर रेलवे स्टेशन की मुख्य सड़क के सामने यह बावड़ी स्थित है। यहाँ जाने का कोई रास्ता नहीं है। आस–पास जंगली झाड़ियाँ व पेड़–पौधे है। बावड़ी के पास जाना आम आदमी के लिए संभव नहीं है। क्यूंकि कंटीली झाड़ियाँ व जीव–जन्तु, साँप वगैरह का डर हमेशा बना रहता है। बावड़ी स् आकार की और नीचे उतरने के लिए सीढ़ीया बनी हुई हैं, सीढ़ीयों के पास ही थोड़ी आगे बावड़ी का पानी दिखाई देता हैं। यह ऐतिहासिक बावड़ी सूखी हुई थी, बारिश में यह बारिश के पानी से भर जाती है।[17] इस बावड़ी का निर्माण वि.सं. 742 में ब्राह्मण चणक के पुत्र माधू ने करवाया था इसके शिलालेख में किसी राजा का नाम अंकित नहीं है। रावण की चंवरी के नाम से जाने वाली गणेश सहित अष्ट–मात्रिकाओं का एक ही चट्टान में अंकन इस बावड़ी की प्रतिष्ठा के समय ही करवाया गया प्रतीत होता है। बावड़ी के पश्चिम छोर पर पालथी मारे चतुर्भुजी सूर्य प्रतिमा चट्टान में उत्कीण है। प्रतिमा के चारों तरफ एक अलंकृत बॉर्डर बना है। जिस पर बाहरी कला का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यह प्रतिमा लगभग 7वीं–8वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।[18] इस बावड़ी को मण्डोर बावड़ी या सुमनोहरा की बावड़ी भी कहा जाता है।

सुमनोहरा बावड़ी मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मण्डोर में स्थित है। इस बावड़ी के लेख में लिखा है– संसार में आसुधन आदि सारहीन है, अतः यश प्राप्ति हेतु यह बावड़ी बनवाई गई है क्योंकि केवल यश ही चिरस्थायी वस्तु है। बावड़ी का जल मीठा है और स्वादिष्ट होने के कारण इसका नाम 'सुमनोहरा' रखा गया। ऐसा लेख से ज्ञात होता है। राजस्थान की सबसे प्राचीनतम बावड़ी जयपुर नगर नामक स्थान पर बनी थी जो सं. 741 (684 ई.) की थी। यह बावड़ी अब सुरक्षित नहीं रही इसलिए सुरक्षित बावड़ियों में मण्डोर की यह 'सुमनोहरा' बावड़ी सबसे प्राचीनतम बावड़ियों में से एक है।[19]

चित्र : मण्डोर बावड़ी की वर्तमान स्थिति

चित्र : मण्डोर बावड़ी की वर्तमान स्थिति

ओ नमः शिवाय।।..............रोद..............स...............सर्वाम्भसामधिपति...................प्रध..............
वो सुराणां। श्रीमत्सुधा धवल हेम विमान वर्ती देवः सदा जयतिपाशधरः
प्रचेताः।1 अविहतचकप्रसरो विकम्याकतिसकल बलिराज्यों (ज्यः)। दूर निराकृत
नरकस्स जयति पुरुषोत्तम ना(थः)2।। चण्णाकसूनुम्मधिूर्गुं–रिनामग्रेसरो भवति
बहि इखरकाख्येकता यो यशसा वित्तिनिचयेन।।3 अप्य...................तनु...................................
भव्य दिग्गामिनो (नः)। अविषम दृष्टिल्लेंकितयापितन्वीश्वर सिद्धं।।4
आयुश्चल धनमसारमिति–
ह पूर्व्वं मत्वा स्थिरं यशः पृथिव्यां स्वादुप्रकीर्णसलिला सुमनोहर–
सेयं वापी निपानमिव सो(स) यशसां च खनिः। 5 संवत्सर शतेषु सप्तसु द्वाचत्वा
रिस्वा (शा) धिकेषु (द्वाचत्वारिंशदधिकेषु) यातेषु।।[20]
मण्डोर (जिला–जोधपुर) वि.सं. 742 (685 ई.) बावड़ी लेख, अखरक[21]
इस अभिलेख का अनुवाद :–
ओं नमः शिवाय।।..............................
......................सारे जलों का अधिपति

तुम देवताओं का शोभायमान सुधा (चूना) जैसा धवल स्वर्ण निर्मित विमान में रहने वाले, पाश को धारण करने वाले, वरूण देवता की जय हो।

वरूण! जिसके चक्र का प्रसार अबाधित है, विक्रम कर समस्त बलवानों के राज्यों को अक्रान्त करने वाला। जिसको बहुत दूर हटा दिया। (शत्रुओं को)..........

नरक को पुरुषोत्तम जीतते है। चण्णक पुत्र माधु गुणवानों में अग्रणी है। इखरक (सम्वतः किसी का नाम) नाम के व्यक्ति ने यश और वित्त संग्रह के द्वारा भव्य दिशाओं में गमन करने वाले। फिर भी उसका कार्य सिद्ध हो गया। आयु चंचल और धन असार है। पहले पृथ्वी पर यश को स्थिर मानकर स्वादिष्ट (मीठे) और विपुल जल वाली सुन्दर.............

यह बावड़ी जलाशय समान यश की खान है। 700 संवत्सर (वि.सं.) से 42 वर्ष अधिक बीतने पर (742 वि.सं. में इस बावड़ी का निर्माण कराया गया)।[22]

मारवाड़ में जल का क्या महत्व रहा है इसे तो यहाँ के लोग और पीढ़ीयों से चली आ रही परम्पराओं से ही जाना जा सकता है। मारवाड़ का अर्थ ही दरअसल मरूप्रदेश है जहाँ पानी की एक–एक बूंद को सहेज कर रखने की परम्परा है। सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक और स्थापत्य कला के साथ अपने गौरवमय अतीत से जुड़े जलाशय तबाही के कगार पर है। यदि समय रहते जलाशयों को नहीं बचाया गया तो भविष्य में होने वाले जल संकट के समय अनदेखी का खामियाजा पूरे शहर वासियों को भुगतना होगा।[23] मण्डोर बावड़ी (सुमनोहरा) भी आज उपेक्षित एवं कचरे से भरी पड़ी हुई है। वहाँ तक पहुँचना भी मुश्किल है क्योंकि वहाँ तक पक्का मार्ग नहीं है और रास्ता कंटीली झाड़ियों से भरा पड़ा है। अतः इस प्राचीन बावड़ी जो पहाड़ काट कर बनाई गई है का रख–रखाव अति आवश्यक है।[24] अभिलेख की भाषा संस्कृत और लिपि कुटिल है। वापी के स्वादिष्ट जल का उल्लेख कर वापी को 'सुमनोहरा' कहा गया है। यहाँ पत्थरों की तनिक भी जड़ाई नहीं की गई है और सीढ़ियाँ भी पत्थर को काट कर बनाई गई है। वापी का आकार लगभग 10 फीट 15 फीट और गहराई जल तक 10–15 फीट है।[25] यह बावड़ी मण्डोर रेलवे स्टेशन के बिल्कुल सामने है तथा राजस्थान पर्यटन विभाग की 'शाही रेल "पैलेस ऑन व्हील" और राजस्थान रायल्स' इसी रेलवे स्टेशन पर रूकती है। पर्यटको को सर्वप्रथम यह बावड़ी दिखाई जा सकती है। जिससे जोधपुर की जल संस्कृति के बारे में पर्यटक जान सकेंगे तथा राजस्थान की एकमात्र 'रॉक कट बावड़ी' भविष्य के लिए सुरक्षित भी रहेगी। पर्यटन विभाग को इसके जीर्णोद्धार व व रख–रखाव की जिम्मेदारी दी जाये तो इसे पर्यटक स्थल घोषित करके संरक्षण प्राप्त हो सकता है।[26] आज जब पूरे मारवाड़ में जल संकट है अतः हमें हमारे परम्परागत जलो के स्रोतों को बचाना अति आवश्यक है।

यह वापी पहाड़ी की गोद में आयी हुई है, जिससे इसमें मिट्टी के गिरने की गुंजाइश न के बराबर रही, सम्भवतः इन्हीं कारणो से यह बावड़ी ठीक अवस्था में है। इस प्रकार जोधपुर की यह प्राचीन वापी तत्कालीन तक्षण और स्थापत्य कला की अनमोल निधि है।[27] लेकिन यह ऐतिहासिक धरोहर आप आज अपना अस्तित्व खोती नजर आ रही है। इसके उचित रख–रखाव की अत्यन्त आवश्यकता है। तभी यह प्राचीन बावड़ी सुरक्षित रह पायेगी। आज जब पूरे देश में जल संकट है तो हमें हमारे परम्परागत जलो के स्त्रोतों को बचाना अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नगर, डॉ. कु. महेन्द्र सिंह, मारवाड़ की जल संस्कृति, राजस्थानी ग्रंथागार, 2011, पृ. 11
2. पूर्वोक्त, पृ. 14
3. गहलोत, डॉ. सुखवीर सिंह, जोधपुर का सांस्कृतिक वैभव, प्रकाशक–जगदीश सिंह गहलोत जन्मशती समारोह समिति, जोधपुर, 14 जनवरी, 1996, पृ. 54
4. पूर्वोक्त, डॉ. महावीर सिंह गहलोत का लेख, पृ. 4
5. गहलोत, जगदीश सिंह, मारवाड़ का इतिहास, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश दुर्ग जोधपुर, पृ. 45
6. तंवर, डॉ. कु. महेन्द्र सिंह, मारवाड़ का पुरातत्व और स्थापत्य, राजस्थानी ग्रंथागार, 2018, पृ. 75
7. रेऊ, पण्डित विश्वेश्वर नाथ, मारवाड़ का इतिहास, भाग–1, राजस्थानी ग्रंथागार, पृ. 91
8. ओझा, रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, पृ. 13
9. परम्परा, मारवाड़ राज्य री जूनी ख्यात, सम्पादक डॉ. जितेन्द्र सिंह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट जोधपुर, पृ. 67
10. गहलोत, की जगदीश सिंह, चित्रमय जोधपुर, नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित, पृ. 26
11. गहलोत, डॉ. सुखवीर सिंह, (चतुर्भुज गहलोत का लेख) जोधपुर का सांस्कृतिक वैभव, पृ. 26
12. तंवर, डॉ. महेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 391
13. गहलोत, सुखवीर सिंह, पुरोहित, डॉ. सोहन कृष्ण, शर्मा, डॉ. नील कमल, राजस्थान के प्रमुख अभिलेख, पृ. 42
14. गुप्ता, डॉ. मोहन लाल, जोधपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रंथागार, पृ. 85
15. गहलोत, सुखवीर सिंह, पुरोहित, डॉ. सोहन कृष्ण, शर्मा, डॉ. नील कमल, पूर्वोक्त, पृ. 42
16. गुप्ता, डॉ. मोहन लाल, पूर्वोक्त, पृ. 85
17. स्वयं द्वारा भौतिक सर्वेक्षण
18. गहलोत, सुखवीर सिंह, पूर्वोक्त (चतुर्भुज गहलोत का लेख) पृ. 65
19. तंवर, डॉ. महेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 391
20. एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट ऑफ आर्क्योलोजिकल डिपार्टमेन्ट जोधपुर स्टेट, 1934, पृ. 5
21. गहलोत, सुखवीर सिंह, राजस्थान इतिहास–कोष, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ. 25
22. गहलोत, सुखवीर सिंह, पुरोहित, डॉ. सोहन कृष्ण शर्मा, डॉ. नील कमल, पूर्वोक्त, पृ.. 43
23. राजस्थान पत्रिका (नन्दकिशोर सारस्वत की रिपोर्ट), मंगलवार, 14 दिसम्बर, 2021, पृ. 12
24. स्वयं द्वारा भौतिक सर्वेक्षण
25. भाटी, डॉ. जितेन्द्र सिंह, राजस्थान के परम्परागत जल संसाधन/राजस्थानी ग्रंथागार 57–58
26. तंवर, डॉ. महेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 391
27. भाटी, डॉ. जितेन्द्र सिंह, राजस्थान के परम्परागत जल संसाधन, राजस्थानी ग्रंथागार, पृ. 58

❖◆❖